विचार बिन्दु

जिस मनुष्य में आत्मविश्वास नहीं है वह शक्तिमान होकर भी कायर है और पंडित होकर भी मूर्ख है। –राम प्रताप त्रिपाठी

मीडिया: उदास रात और टूटे हुए दीये

हम कुछ आदर्शों को पढ़ते–सुनते हुए बड़े हुए हैं, जैसे शिक्षक राष्ट्र निर्माता होता है, डॉक्टर भगवान के बराबर होता है, पंच (न्याय करने वाला) परमेश्वर होता है और मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ होता है। इस क्रम में और भी बातें याद आ सकती हैं। लेकिन इन सब आदर्शों के साथ हुआ यह है कि स्थितियां बदलती गई हैं और आदर्श कहने भर को रह गए हैं, यथार्थ उनसे बहुत दूर चला गया है। अब संकट यह होता है कि ख़ास तौर पर पुरानी पीढ़ी के वे लोग जो इन आदर्शों की छांव में पले–बढ़े हैं वे जब समकालीन यथार्थ को देखते हैं तो बहुत व्यथित होते हैं। उन्हें बरबस कवि प्रदीप का लिखा यह गाना याद आ जाता है: *"देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान, कितना बदल गया इंसान!"*

हम लोगों ने पत्रकारिता को एक मिशन के रूप में देखा है और यह बात अभी बहुत पुरानी नहीं हुई है कि हमारी आज़ादी की लड़ाई के बहुत सारे पुरोधाओं ने अपने आदर्शों के प्रचार–प्रसार के लिए ही पत्रकारिता की थी। यह स्थिति आज़ादी के बाद के कुछ वर्षों तक भी रही और लम्बे समय तक लोगों के मन में यह भाव रहा करता था कि अगर अखबार में छपा है तो सही ही होगा। जो लोग अखबार निकालते थे, भले ही उनके व्यावसायिक उपक्रम भी रहे थे, उन्होंने मोटे तौर पर अपने व्यवसाय और अखबार में घालमेल नहीं किया। तब संपादक की एक सत्ता होती थी और मालिक लोग प्राय: उस सत्ता का सम्मान करते और उसे पूरी आज़ादी देते थे। आहिस्ता–आहिस्ता स्थितियां बदलीं और आज हम जहां पहुंच गए हैं वहां लगता है कि अखबार –अब उसका रूप व्यापक होकर वह मीडिया बन चुका है– और व्यवसाय दोनों एक–दूसरे में घुल मिल गए हैं। पूंजीवाद की गोद में पल कर बड़ी हुई नई पीढ़ी को यह बात अजीब भी नहीं लगती है।

आज का मीडिया देखें तो लगता है कि वहां अहर्निश, 247 राग दरबारी गाया बजाया जा रहा है। ज़्यादातर अख़बार, ज़्यादातर समाचार चैनल एक–सी चीज़ें परोस रहे हैं। सब जगह शक्तिमान का गौरव गान है। लगता है जैसे कवि इंदीवर ने यह गाना इन्हीं को ध्यान में रखकर लिखा था: *"जो तुमको हो पसंद वही बात कहेंगे/ तुम दिन को अगर रात कहो, रात कहेंगे"*। यह देखना बहुत रोचक, और कष्टकारी भी लगता है कि वे सारे समाचार जिनसे शक्तिमान को तनिक भी असुविधा हो सकती हो, सिरे से नदारद रहते हैं। यह आकस्मिक नहीं है कि हमारे बहुत सारे सुधी मित्रों ने अखबार पढ़ना और टीवी पर समाचार देखना बंद कर दिया है। पढ़ने और देखने को बचा भी क्या है? बेशक, कुछ अख़बार ऐसे हैं, जैसे हमारा **राष्ट्रदूत**, जो अपने व्यावसायिक हितों को दांव पर लगाकर भी अपने धर्म का पालन किये जा रहे हैं, लेकिन मामला दीये और तूफान की लड़ाई वाला है। सत्ता इतनी ताकतवर हो गई है कि उसे अपने खिलाफ़ चूं तक बर्दाश्त नहीं है और स्वतंत्र आवाज़ को दबाने में उसे तनिक भी हिचकिचाहट महसूस नहीं होती है। जो हाल अखबारों का है वही हाल समाचार चैनलों का भी है। आपके पास चैनलों की भरमार है लेकिन अगर आप उनके समाचारों में विविधता तलाश करेंगे तो निराश ही होंगे। लगता है जैसे सबके समाचार एक ही फैक्ट्री में ढल कर निकले हैं। अगर कोई चैनल धारा के विरुद्ध बहने का प्रयास करता भी है तो उसे कुचलने के प्रयास शुरू हो जाते हैं। उस पर दुष्प्रचार के गोले दागे जाने लगते हैं और भाड़े के अथवा महामहिम के वफादार सैनिक उसकी छवि पर कालिख पोतने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं।

ऐसे में किसी भी विवेकशील व्यक्ति की मीडिया से निराशा स्वाभाविक है। यहां मीडिया से हमारा आशय मुख्यधारा के मीडिया से है। मुख्यधारा कहना इसलिए ज़रूरी है कि आगे हमें वैकल्पिक मीडिया की भी बात करनी है, जिसमें यह आश्वस्ति होती है कि सब कुछ अभी ख़त्म नहीं हो गया है। कहते हैं कि आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है। मुख्यधारा के मीडिया की अधोगति ने वैकल्पिक मीडिया का पथ प्रशस्त किया है। आज यह देखकर सुखद आश्चर्य होता है कि बावज़ूद घने अंधेरे के उम्मीद की कुछ किरणें यहां–वहां झिलमिला रही हैं। अभी मैंने अख़बारों की चर्चा करते हुए **राष्ट्रदूत** का उल्लेख किया। ऐसे अनेक समाचार पत्र यहां–वहां से निकल कर हमें निराशा के गर्त में जाने से बचा रहे हैं। इसी तरह कई अलाभकारी मीडिया संस्थाएं हैं जो विशुद्ध मिशनरी भाव से समाचार व सूचना प्रसार का काम करने में जुटी हैं। इनका आर्थिक आधार छोटे–मोटे दान या समानधर्मा व्यावसायिक संस्थानों से मिल जाने वाले छिटपुट विज्ञापन हैं। इनके पास इतनी पूंजी तो नहीं है कि ये अपने चैनल चला सकें इसलिए ये यू ट्यूब और विभिन्न सोशल मीडिया मंचों के माध्यम से लोगों तक पहुंचते और सच्चाई को पहुंचाते हैं। इन्हीं का अगला चरण वे मीडिया वेबसाइट्स और यू ट्यूब चैनल हैं जो इनकी तरह अलाभकारी तो नहीं हैं, वे घोषित रूप से लाभ के लिए काम करते हैं लेकिन उन्होंने अपने ईमान का सौदा नहीं किया है और सारे ख़तरे उठाकर सच को सामने लाने का काम करते हैं।

वैकल्पिक मीडिया की विशेष श्रेणी के काम की अनेक सराहनीय बानगियां हाल में हमने किसान आंदोलन के समय देखी हैं।जब सरकार येनकेन प्रकारेण इस आंदोलन को कुचलने पर आमादा थी तब इन जांबाज़ पत्रकारों ने तमाम खतरे उठाकर इस आंदोलन की ख़बरें हम तक पहुंचा कर उम्मीद की एक और लौ जगाई।

फिर कुछ अन्य वैकल्पिक मीडिया चैनल हैं जो पूरी तरह पाठकीय/दर्शकीय सहयोग पर आधारित हैं। ये अपनी सामग्री केवल भुगतान करने वाले दर्शकों को सुलभ कराते हैं। अब क्योंकि हम लोग अभी तक पैसे देकर ख़बरें पाने के अभ्यस्त नहीं हुए हैं, इनकी पहुंच अपेक्षाकृत सीमित है। लेकिन ये भी एक राह तो बना ही रहे हैं। आखिर समाचार पाने के लिए हमें कुछ खर्च क्यों नहीं करना चाहिए? वैकल्पिक मीडिया की एक और श्रेणी है जिसका संचालन कोई पत्रकार विशेष अकेले या अपनी छोटी–सी टीम के साथ मिलकर करता है। इस श्रेणी के काम की अनेक सराहनीय बानगियां हाल में हमने किसान आंदोलन के समय देखी हैं। जब सरकार येनकेन प्रकारेण इस आंदोलन को कुचलने पर आमादा थी तब इन जांबाज़ पत्रकारों ने तमाम खतरे उठाकर इस आंदोलन की ख़बरें हम तक पहुंचा कर उम्मीद की एक और लौ जगाई।

इन अपेक्षाकृत व्यवस्थित मीडिया माध्यमों के साथ–साथ इधर सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों पर वैयक्तिक समाचार प्रेषण और अभिव्यक्तियां भी मीडिया के व्यवसायिकरण और उसके बिक जाने के खिलाफ प्रतिरोध की आवाज़ के रूप में सामने आ रही हैं। हाल के समय में यह बात देखना बहुत आह्लादक है कि बड़े माध्यम जिन समाचारों को छूने से भी डरते हैं सामान्य नागरिक अपने–अपने सोशल मीडिया खातों से उन्हें समाचारों को आग की तरह फैला देते हैं। यह देखना बहुत रोचक है कि मुख्यधारा के मीडिया की प्रमुख ख़बरों और इन वैकल्पिक माध्यमों पर सुर्खियां पाने वाली ख़बरों में कितना अंतर है। और ऐसा केवल सत्ता को चुनौती देने वाले समाचारों के मामले में ही नहीं हो रहा है। कला–साहित्य–संस्कृति की दुनिया की वे खबरें जो मुख्यधारा के मीडिया की स्वार्थी योजना में कहीं नहीं आ पाती हैं वे भी इन्हीं के कारण लोगों तक पहुंच पाती हैं।

लेकिन इसमें एक बड़ा लेकिन भी है। पिछले कुछ समय से हमारे देश में अत्यधिक तीव्र गति से राजनीतिक ध्रुवीकरण हुआ है। लोग सीधे–सीधे इस या उस पक्ष के साथ हो गए हैं। जैसे दो पक्षों के अलावा कुछ रह ही नहीं गया है। या तो आप समर्थक हैं या विरोधी। इस सोच का सीधा असर लोगों की निजी टिप्पणियों पर पड़ने लगा है। अब हम अपनी आंखों से नहीं देखकर 'उनकी' आंखों से देखने लगे हैं जिनके हम समर्थक हैं। इस दौर में पारस्परिक वैमनस्य भी बहुत बढ़ा है। अब विचार–विमर्श नहीं होता, सीधे गाली दी जाती है। शाब्दिक हिंसा अपवाद न रहकर आम हो गई है। इसी के साथ एक और गड़बड़ हुई है। राजनीतिक दलों के आई टी सेल के वेतन भोगी कर्मचारियों ने भी यहां भारी घुसपैठ कर ली है। अब यहां नागरिक कम बोलते हैं, प्रचारक ज़्यादा बोलते हैं। नागरिक और नागरिक के बीच तो संवाद हो सकता है, नागरिक और प्रचारक के बीच क्या संवाद हो? जो विवेकशील हैं उन्होंने एक रास्ता निकाला है। वे अपनी बात कहकर मौन हो जाते हैं, अनावश्यक और अनर्गल बातों का जवाब देने में अपनी ऊर्जा नष्ट नहीं करते। लेकिन इस सब में संवाद का पर्यावरण आहत हुआ है, इसे स्वीकार करना ज़रूरी है।

कुल मिलाकर हालात बहुत सुखद नहीं हैं। अंधेरा ज़्यादा घना है, रोशनी की टिमटिमाहट भर है। यह तो समय ही बताएगा कि इस अंधियारी रात की सुबह कब होगी। तब तक आइये, फ़िराक़ गोरखपुरी को गुनगुनाएं: *"अभी तो ज़िक्र–ए–सहर दोस्तों है दूर की बात/ अभी तो देखते जाओ बड़ी उदास है रात। इसी खंडहर में कहीं कुछ दीये हैं टूटे हुए/ इन्ही से काम चलाओ बड़ी उदास है रात"*।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसादअग्रवाल
(शिक्षाविद् और साहित्यकार)

तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा

जन जन के नायक महान स्वतन्त्रता सेनानी नेता जी ने हमें अपने जीवन में सदैव आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी थी, सुभाष बोस ने हमें संदेश दिया था कि सफलता, हमेशा असफलता के स्तंभ पर खड़ी होती है। जो अपनी ताकत पर भरोसा करते हैं, वो आगे बढ़ते हैं किन्तु उधार की ताकत वाले घायल हो जाते हैं। नेताजी बार–बार बोलते थे कि अन्याय और अपराध को सहना और गलत के साथ समझौता करना सबसे बड़े पाप है। भारतीयों का कर्तव्य है कि हम अपनी स्वतंत्रता का मोल अपने खून से चुकाएं। हमें अपने बलिदान और परिश्रम से जो आज़ादी मिले, हमारे अन्दर उस आजादी की रक्षा करने की ताकत होनी चाहिए। एक सैनिक के रूप में आपको हमेशा सच्चाई, कर्तव्य और बलिदान पर जीना होगा । अगर तुम भी अजेय बनना चाहते हो तो इन तीन आदर्शों को अपने हृदय में समाहित कर लो।

याद रखिये कि जीवन में सफलता का आना अनिवार्य ही है। नेताजी के मुताबिक मां का प्यार सबसे गहरा और है स्वार्थ रहित होता है। माँ के प्यार को मापने का कोई पैमाना हो नहीं सकता है। नेताजी ने हमको समझाया कि हमारे देश की प्रमुख समस्याएं गरीबी,अशिक्षा, बीमारी, कुशल उत्पादन एवं वितरण सिर्फ समाजवादी तरीके से ही किया जा सकता है।

आजाद हिन्द फौज के प्रणेता क्रांतिकारी जननायक सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को कटक के निवासी जानकीनाथ बोस प्रभावती के यहां हुआ था। सुभाष 14 लड़के–लड़कियों में से नौवीं संतान थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कटक में रेवेनशा कॉलेजिएट स्कूल में हुई। उन्होंने कलकत्ता यूनिवर्सिटी से 1919 में बीए की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास की थी, इस परीक्षा में उन्हें यूनिवर्सिटी में उन्हें दूसरा स्थान मिला था। 1920 की आईसीएस परीक्षा में उन्होंने चौथा स्थान मिला। सुभाष का मन अंग्रेजों के अधीन काम करने का नहीं था इसलिए उन्होंने एक साल के भीतर 22 अप्रैल 1921 को त्यागपत्र दे दिया ।

उनके दिल में अंग्रेजों की गुलामी और भारतमाता का आजाद करने का जुनून था। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ की सलाह के अनुसार भारत वापस आने पर वे सर्वप्रथम बंबई गये और गांधीजी से मिले। 20 जुलाई 1921 को गांधीजी और सुभाष के बीच पहली मुलाकात हुई। बहुत जल्द ही सुभाष देश के एक महत्वपूर्ण युवा नेता बन गये। नेहरूजी के साथ सुभाष ने कांग्रेस के अंतर्गत युवाओं की इण्डिपेंडेंस लीग शुरू की। 1928 में जब साइमन कमीशन भारत आया तब कांग्रेस ने उसे काले झंडे दिखाये। कोलकाता में सुभाष ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया। साइमन कमीशन को जवाब देने के लिये बनाए गए आयोग के मोतीलाल नेहरू अध्यक्ष बने । सुभाष बाबू को इस आयोग का सदस्य बनाया गया। 1930 में जब कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर में हुआ तब तय किया गया कि भारत में 26 जनवरी का दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जायेगा।

अपने सार्वजनिक जीवन में सुभाष को कुल 11 बार कारावास का दण्ड मिला। 1930 में सुभाष कारावास में ही थे कि चुनाव में उन्हें कोलकाता का महापौर चुना गया

डा. जे. के. गर्ग

इसलिए सरकार उन्हें रिहा करने पर मजबूर हो गयी। वे जब कलकत्ता महापालिका के प्रमुख अधिकारी बने तो उन्होंने कलकत्ता के रास्तों का अंग्रेजी नाम हटाकर भारतीय नाम पर कर दिया। 1934 ई. में सुभाष अपना इलाज कराने के लिए ऑस्ट्रिया गए थे। उस समय उन्हें अपनी पुस्तक टाइप करने के लिए एक टाइपिस्ट की जरूरत थी। उन्हें एमिलीशेंकल नाम की एक टाइपिस्ट महिला मिली। उन्होंने सन् 1942 में बाढ़गस्टिन नामक स्थान पर हिन्दू रीति रिवाज के अनुसार एमिलीशेंकल से विवाह किया। एमिलीशेंकल से उनको पुत्री रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम अनीता रखा। 1938 में हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए चुना गया। इस अधिवेशन में सुभाष का अध्यक्षीय भाषण बहुत ही प्रभावी हुआ। 3 मई 1939 को सुभाष ने कांग्रेस के अन्दर ही फॉरवर्ड ब्लाक के नाम से अपनी पार्टी की स्थापना की। कुछ दिन बाद सुभाष को कांग्रेस से ही निकाल दिया गया। बंगाल की भयंकर बाढ़ में घिरे लोगों को उन्होंने भोजन, वस्त्र और सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने का

■ जीवन में सुभाष को कुल 11 बार कारावास का दण्ड मिला

साहसपूर्ण काम किया था और युवक–दल की स्थापना की।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेज़ों के खिलाफ लड़ने के लिये, उन्होंने जापान के सहयोग से आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन किया था। उनके द्वारा दिया गया जय हिन्द का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है। उन्होंने भारतवासियों को 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा' का नारा दिया था, जो आज भी हमारे मन मस्तिष्क में गूंज रहा है।

21 अक्टूबर 1943 को सुभाष बोस ने आजाद हिन्द फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार बनायी जिसे जर्मनी, जापान, फिलीपींस, कोरिया, चीन, इटली, मान्छेको और आयरलैंड समेत 11 देशों ने मान्यता दी। 6 जुलाई 1944 को उन्होंने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गांधी के नाम एक प्रसारण जारी किया जिसमें उन्होंने इस निर्णायक युद्ध में विजय के लिये उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएं मांगी। इस भाषण के दौरान नेताजी ने गांधीजी को राष्ट्रपिता कहा, तभी गांधीजी ने भी उन्हें नेताजी कहा, तभी से उन्हें नेताजी कहा जाने लगा। नेताजी ने कहा था कि हमें अपने बलिदान और परिश्रम से जो आज़ादी मिले, हमारे अन्दर उसकी रक्षा करने की ताकत होनी चाहिए। सुभाष बाबू ने कहा था–याद रखिए सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना है।

23 अगस्त 1945 को टोक्यो रेडियो ने बताया कि सैगोन में नेताजी एक बड़े बमवर्षक विमान से आ रहे थे कि 18 अगस्त को ताइहोकू हवाई अड्डे के पास उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में उनके साथ सवार जापानी जनरल शोदाई, पायलट तथा कुछ अन्य लोग मारे गये। नेताजी गम्भीर रूप से जल गये थे। उन्हें ताइहोकू सैनिक अस्पताल ले जाया गया जहां उन्होंने अंतिम श्वास ली । भारतीय महालेखाकार से प्राप्त दस्तावेजों के अनुसार नेताजी की मृत्यु 18 अगस्त 1945 को ताइहोकू के सैनिक अस्पताल में रात्रि ग्यारह बजे हुई थी। आजाद हिन्द फौज बनाने का दूरगामी परिणाम हुआ। सन् 1946 के नौसेना का विद्रोह इसका जीता–जागता प्रमाण है। नौसेना विद्रोह के बाद ही ब्रिटेन को समझ आ गया था कि भारत को स्वतंत्र करने के अलावा उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं बचा। आजाद हिन्द फौज को छोड़कर विश्व–इतिहास में ऐसा कोई भी दृष्टांत नहीं मिलता जहां तीस–पैंतीस हजार युद्धबंदियों ने संगठित होकर अपने देश की आजादी के लिए ऐसा प्रबल संघर्ष छेड़ा हो। सुभाषचंद्र बोस को महात्मा गांधी ने उन्हें देशभक्तों का देशभक्त कहा था। नेताजी के 125वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भारत सरकार 2022 के गणतंत्र दिवस समारोह का शुभारंभ 24 जनवरी के बजाय 23 जनवरी से करने की योजना बना रही है। जन–जन के दुलारे नेताजी को उनके 125वें जन्म दिन पर समूचा देश उनके श्री चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

डा. जे. के. गर्ग
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर

हिमालय से हजार किमी चलकर बड़ी संख्या में मोरेल बांध पहुंचे सफेद हंस

लालसोट, (निसं)। मोरेल बांध पर करीब एक हजार किलोमीटर की लंबी दूरी की यात्रा तय कर बड़ी संख्या में पहुंचे सफेद हंस के नाम से जाने वाले बार हेडेड गुज पक्षी प्रेमियों के लिए आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं।

मोरेल बाध इन दिनों विभिन्न प्रजातियों के हजारों की संख्या में प्रवासी पक्षियों से गुलजार है। इन्ही विदेशी मेहमान परिंदों में इस बार लगभग दो सौ की संख्या में सफेद हंस

■ दुनिया का सबसे अधिक ऊंचाई पर उड़ने वाला पक्षी है सफेद हंस

के नाम से मशहूर बार हेडेड गूज एंसर इंडिकस का एक दल मोरेल बांध की सुंदरता में चार चांद लगा रहा है।

मोरेल बांध की जैवविविधता और प्रवासी पक्षियों के डेटा संधारण का कार्य कर रहे मोरेल मैन के नाम से प्रसिद्ध राजेश पायलट राजकीय महाविद्यालय के एसोसियट प्रोफेसर और बायोडाइवर्सिटी एन्ड रिसर्च डेवलपमेंट सोसायटी के स्टेट कोर्डिनेटर डॉ सुभाष पहाड़िया ने बताया कि बार हेडेड गूज जिसे सामान्यतया सफेद हंस के नाम से भी जानते है। ये पक्षी एक हल्के भूरे रंग का होता है जो अपने सिर पर दो काली पट्टियों, पीले–नारंगी चोंच और पैरों की

मोरेल बांध पर अढखेलियां करते सफेद हंस

विशेष पहचान के द्वारा पहचाना जाता है। यह मध्यम आकार का हंस है जिसकी कुल लंबाई में 70–75 सेमी लम्बाई और इसका वजन 1.6 से 3.2 किलोग्राम तक होता है।

दुनिया के सबसे अधिक ऊंचाई पर उड़ने वाले यह पक्षी सर्दियों के मौसम में तिब्बत, कजाकिस्तान, मंगोलिया, रूस आदि जगहों से लगभग आठ हजार किलोमीटर का एक लंबा सफर तय करके हिमालय की ऊंची चोटियों को पार करके भारत में आते हैं। ये पक्षी अपने प्रवास के दौरान उड़ते समय अंतर बनाए रखने के लिए और एक दूसरे के साथ से संवाद करने के लिए तथा अपनी ऊर्जा बचाने के लिए वी–आकार की संरचनाओं में उड़ते हैं। बार हेडेड गीज़ सफेद हंस में एक विशेष प्रकार का एमिनो एसिड व हीमोग्लोबिन भी होता है जो अन्य पक्षियों की तुलना में ऑक्सीजन को जल्दी अवशोषित करता है।

इसीलिए ये इतनी ऊंचाई पर आसानी से उड़ सकते है। पक्षीविद डॉ पहाड़िया के अनुसार पक्षियों में प्रवास विशेष पर्यावरणीय संकेत और जैविक घड़ी के द्वारा उत्पन्न होते है जो इन पक्षियों को बर्फीले क्षेत्रों से गर्म क्षेत्रों की ओर तथा गर्म से ठंडे क्षेत्रों की और जाने का संकेत देता है। मोरेल बांध का जलस्तर अभी कम होने के कारण और आसपास गेहूं की फसल, घास और वनस्पति पर्याप्त मात्रा में होने के कारण बार हेडेड गीज़ को पर्याप्त भोजन व अनुकूल माहौल मिला हुआ है। ये पक्षी कभी–कभी मोलस्क, कीड़े और क्रस्टेशियंस भी खाते हैं।

मामाजी महाराज ने सवा सात लाख का मायरा भरा

बालोतरा, (निसं)। बालोतरा शहर में माली समाज के एक शादी समारोह में जिले के लालाणा गांव स्थित श्री मामाजी महाराज एवं सुभद्रा माताजी का धाम सडलानाडा से करीब सवा सात लाख का मायरा आया। मायरा कार्यक्रम की रस्म गादीपति महंत भुवनेश्वरपुरी महाराज ने अनूठी पहल करते हुए संत–महात्माओं की मौजूदगी में विधि–विधान पूर्वक अदा की।

जानकारी के अनुसार बालोतरा निवासी माली गणपतराज सुपुत्र जसराज पंवार ने मामाजी महाराज एवं सुभद्रा माताजी का धाम सडलानाडा पर वर्ष 2016 में हुई मूर्ति प्रतिष्ठा कार्यक्रम में इन्होंने तोरण वंदन की बोली ली थी, उस दिन से यह परिवार वहां दर्शनार्थ आता–जाता रहता है। रविवार को इनकी लडकी के शादी समारोह में सडलानाडाधाम के गादीपति महंत भुवनेश्वरपुरी महाराज इनके यहां मायरा लेकर आए और धूमधाम व

■ मायरा कार्यक्रम की रस्म गादीपति महंत भुवनेश्वरपुरी महाराज ने संत-महात्माओं की मौजूदगी में अदा की

■ ऐसा आयोजन राजस्थान में पहली बार हुआ

हर्षोल्लास के साथ मायरा की रस्म अदा की। इनके साथ महंत नरसिंगदास महाराज, महंत मृत्युंजयपुरी महाराज, महंत जयदेवभारती महाराज, महंत जनकपुरी महाराज, महामण्डलेश्वर जगदीशदास महाराज व राघवदास महाराज ने शिरकत की। कार्यक्रम के दौरान साधु–संतों ने कहा कि ऐसा आयोजन राजस्थान में प्रदेश पहली बार हुआ है।

`महंत भुवनेश्वरी महाराज के साथ संत महात्माओं ने मायरा पहनाया।

जयहिंद के उद्घोषक - सुभाषचंद्र बोस

जयहिंद के उद्घोष मात्र से हर देशभक्त की शिराओं में रक्त स्फूर्ति बनकर कर दौड़ने लगता है । जब देश में ब्रिटेनिया सरकार हिंदुस्तान के युवाओं को सैनिक रूप में भर्ती कर द्वितीय विश्व युद्ध में विश्व का सिरमौर बनने का सपना पाले हर संभव प्रयास में जुटी थी तब अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए सुभाषचंद्र बोस ने जापान की मदद से आजाद हिंद फौज का गठन किया। तब उनके द्वारा दिया गया जयहिंद का नारा पूरे देश का राष्ट्रीय नारा बन गया। 21 अक्तुबर 1943 को नेताजी ने आजाद हिंद फौज के सुप्रीम कमांडर की हैसियत से स्वतन्त्र भारत की अस्थाई सरकार बनायी। जिसे जर्मनी, जापान, कोरिया, चीन, इटली, आयरलैंड, फिलीपींस सहित 11 देशों की सरकारों ने मान्यता दी थी।

डॉ उमेश प्रताप वत्स

देश में वंदेमातरम् के जय घोष के बाद यदि किसी नारे ने लोगों के ठंडे पड़ चुके रक्त में उबाल लाने का कार्य किया तो वह था तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा" इस आव्हान के बाद देश के अनेक हिस्सों से जहाँ बड़ी संख्या में लोगों में नेताजी की आजाद हिंद फौज में शामिल होने की होड़ सी लग गई वहीं महिलाओं ने भी जीवनभर की अर्जित की गई संपत्ति व गहने नेता जी के चरणों में देश की आज़ादी हेतु जंग की व्यवस्था के लिए समर्पित कर दिये। नेता जी का तीसरा नारा था "दिल्ली चलो" जब 5 जुलाई 1943 को सिंगापुर के टाउन हॉल के सामने सेना के सर्वोच्च सेनापति के रूप में सेना को संबोधित करते हुए नेताजी ने यह नारा दिया था, तब जापानी सेना के साथ मिलकर अंग्रेजी सेना से बर्मा सहित इंफाल और कोहिमा में एक साथ मोर्चा लिया। अंग्रेजों ने भारतीय नेताओं के कान भरे कि सुभाष देशद्रोही है, वह राक्षसी जापानियों के साथ है। भारत को जापान का गुलाम बनाने के लिए देशद्रोह कर रहे हैं ऐसा अंग्रेजों ने भारतीय नेताओं से कहलवाया। नेहरू, गाँधी जैसे तत्कालीन बड़े नेताओं ने सुभाष जी को देशद्रोही कहा। कम्युनिस्टों ने तोजो का कुत्ता कहा। इन सब बातों से नेताजी सुभाष को बहुत आघात लगा। एक सभा में उन्होंने कहा कि, "जापान जब तक हमारे मित्र का शत्रु था तब तक मैं जापान नहीं आया, जब जापान ने ब्रिटेन और अमेरिका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की, तभी मैं यहाँ आया।" तब गांधी जी व नेहरु का भ्रम दूर हुआ। आगे आजाद हिंद सेना के बचाव के लिए नेहरू न्यायालय में भी गये। हिरोशिमा व अगले दिन नागाशाकी पर अणु बम के प्रयोग से जापान की रीढ़ ही टूट गई। तब नेताजी बर्मा छोड़कर बैंकॉक की ओर निकल पड़े। वहां से जब वे टोकियो के लिए विशेष विमान से कर्नल हबीबुर्रहमान के साथ फार्मोसा द्वीप के ऊपर से गुजर रहे थे तो विमान में आग लग गई। माना जाता है कि तब 18 अगस्त 1945 को इस दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई। भारत के लोग व नेताजी के परिवार के लोगों का मानना है कि 1945 में विमान दुर्घटना में नेता जी की मृत्यु नहीं हुई। वे उसके बाद रूस में नजरबंद थे। यदि ऐसा नहीं है तो भारत सरकार ने आज तक भी उनकी मृत्यु के संबंध में दस्तावेज अब तक सार्वजनिक क्यों नहीं किये। यदि देश की जनता के साथ–साथ हमारे आज के नेतागण भी नेताजी सुभाषचंद्र के आदर्श को अपने जीवन में उतारे तो यही उस वीर पराक्रमी जन–जन के नेता को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

डॉ उमेश प्रताप वत्स

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 24 जनवरी, 2022

माघ मास कृष्ण पक्ष, षष्ठी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2078, हस्त नक्षत्र दिन 9:15 तक, सुकर्मा योग दिन 11:11 तक, वणिज करण प्रात: 8:44 तक, चन्द्रमा रात्रि 11:08 पर तुला राशि में प्रवेश करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मकर, चन्द्रमा–कन्या, मंगल–धनु, बुध–मकर, गुरू–कुम्भ, शुक्र–धनु, शनि–मकर, राहु–वृष, केतु–वृश्चिक राशि में।

कुमार योग सूर्योदय से प्रात: 8:44 तक है। रवियोग दिन 10:10 तक है और 11:15 से पुन: आरम्भ होगा। भद्रा प्रात: 8:44 से रात्रि 8:16 तक रहेगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:40 तक, शुभ 9:59 से 11:19 तक, चर 1:59 से 3:18 तक, लाभ–अमृत 3:18 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:58

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

वृष
नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है।

मिथुन
परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक–सामाजिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कर्क
परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। आपसी अनबन–मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में अड़चनें अभी यथावत बनी रहेगी। धन हानि हो सकती है। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अच्छा परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा सफल रहेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मीन
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।